बीसवीं सदी के भारत के आध्यात्मिक समाज सुधारक स्वामी सहजानंद सरस्वती : एक मूल्यांकन

लकी शर्मा
शोधार्थी, इतिहास विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

शोध सारांश

स्वामी सहजानन्द सरस्वती20वीं सदी के भारत के राष्ट्रवादी नेता एवं स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में मूर्धन्य हैं। वर्तमान उत्तरप्रदेश के गाज़ीपुर जिले में जन्में स्वामी सहजानंद आदि शंकराचार्य सम्प्रदाय के दसनामीसंन्यासी अखाड़े के दण्डी संन्यासी भी थे| भारत में किसान के हित की बात करने और उनके लिए आवाज़ उठाने की वजह से स्वामी जी प्रमुख रूप से याद किये जाते हैं। जननायक संन्यासी और युगद्रष्टा स्वामी जी ने अपने कर्तृत्व एवं लेखनी के माध्यम से समाज के दिशा-निर्देशन का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके जीवन यात्रा का मूल्याङ्कन एक बुद्धिजीवी लेखक, समाज-सुधारक, क्रान्तिकारी, इतिहासकार एवं किसान.नेता के रूप में किया जा सकता है। इस लेख का उद्देश्य स्वामी जी के प्रारंभिक जीवन काल से लेकर उनके आध्यात्मिक सामाजिक और राजनितिक जीवन यात्रा पर एक सुष्पष्ट, तथ्ययुक्त एवं तार्किक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

प्रारंभिक जीवन.संघर्ष

स्वामी सहजानंद सरस्वती का जन्म 22 फरवरी सन 1889 को महाशिवरात्रि के दिन पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के देवा गांव में हुआ। इनके बचपन का नाम नवरंगराय जुझौतिया था| इनका जन्म जुझौतिया ब्राह्मण परिवार में हुआ था इसिलए इनके नाम में भी यह शब्द लगा रहा|जुझौतिया ब्राह्मण, भूमिहार जाति की एक उपशाखा है| जब वे मात्र 3 वर्ष के थे तभी उनके माताजी का देहावसान हो गया जिस वजह से उनका पालन पोषण उनकी मौसी ने किया। निश्चित आयु के पश्चात उनको नजदीकी विद्यालय में दाखिला दिलाया गया जहां उन्होंने अच्छे अंकों के साथ कक्षाएं उत्तीर्ण की|अपने जीवन वृतांत 'मेंराजीवनसंघर्ष' में स्वामी जी लिखते हैं-'पढ़ाई के दौरान मेरा मन अध्यात्म में रमने लगा था| उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था और घरवालों

नेविरक्ति की सम्भावना को भांपते हुए सन 1905 में 16 वर्ष की आयु में मेरा विवाह संपन्न कर दिया'|[1]दुर्भाग्यवश अगले वर्ष हीं उनकी पत्नी का निधन हो गया| कम उम्र में मां के स्वर्ग सिधार जाने और अब पत्नी का भी साथ छूट जाने की वजह से उन्हें गहरी आत्मीय चोट पहुंची| कुछ महीनों तक पूरा परिवार शोक संतप्त रहा परंतु लगभग एक वर्ष के बाद घर के लोग उनकी कम आयु को देखते हुए उनका दोबारा विवाह करवाने का विचार करने लगे| दुबारा विवाह करने में असहमति की वजह से उन्होंने परिवार के लोगों से रुष्ट होकर गृह त्याग दिया| लगभग दो वर्षों तक यत्र-तत्र भ्रमण करने के बाद वर्ष 1909 में वे काशी पहुंचें| वहां उन्होंने दंडी स्वामी अद्वैतानन्द से दीक्षा ग्रहण कर दण्ड प्राप्त किया और दण्डी स्वामी बन गएँ जिसके बाद उन्हें सहजानंद सरस्वती के नाम से जाना जाने लगा|[2]

संन्यास ग्रहण करने के बाद भी उनके जीवन में चुनौतियाँ कम नहीं हुई| उनके संन्यास ग्रहण करने और दंड धारण करने पर भी प्रश्न खड़े किये गयें| काशी के कुछ पंडितों ने उनके संन्यास पर सवाल उठाया। पंडितों का

©Indira Gandhi National Open University

कहना था कि ब्राह्मणेतर जातियों को दण्ड धारण करने का अधिकार नहीं है। स्वामी सहजानंद ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार किया और विभिन्न मंचों पर शास्त्रार्थ कर ये प्रमाणित किया कि भूमिहार भी ब्राह्मण ही हैं तथा हर योग्य व्यक्ति संन्यास ग्रहण करने की पात्रता रखता है। काशी में रहते हुए उन्होंने धार्मिक कुरीतियों के विरोध में भी मोर्चा खोला। भूमिहार जाती के मूल को लेकर जो विभिन्न धारणाएं थी उनपर आधारित सिद्धांतों का प्रतिपादन किया तथा भूमिहार जाति को ब्राह्मणों की एक उपशाखा के रूप में स्थापित किया| सन् 1909 से लेकर 1920 तक वे आध्यात्मिक कार्यों तथा चिंतन मनन में लगे रहें। इस दौरान काशी के साथ-साथ बक्सर ज़िले का डुमरी, सिमरी और ग़ाज़ीपुर का विश्वम्भरपुर गांव उनका कार्यक्षेत्र रहा। संन्यास के उपरांत उन्होंने काशी और दरभंगा में कई वर्षों तक संस्कृत साहित्य, व्याकरण, न्याय और मीमांसा का गहन अध्ययन किया। साथ-साथ देश की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों के अध्ययन भी करते रहे| आध्यत्मिक विचारों के प्रवर्तन व शास्त्रार्थ में निस्वार्थ भाव से लगे रहने के साथ-साथ उन्होंने लेखन-सम्पादन, पठन-पाठन जैसे कार्यों में भी रूचि ली| काशी से उन्होंने भूमिहार ब्राह्मण नामक समाचार पत्र निकाला। शोध के बाद उन्होंने 'भूमिहार ब्राह्मण परिचय' नामक ग्रंथ लिखा जो आगे चलकर'ब्रह्मर्षि वंश विस्तार' के नाम से सामने आया। इस ग्रन्थ के माध्यम से उन्होंने ब्राह्मणों के विभिन्न शाखाओं-उपशाखाओं के उत्पत्ति के प्रति धारणाओं को सैद्धांतिक स्वरुप दिया।[3]

राजनैतिक जीवन-यात्रा

स्वामी जी का भारतीय राजनीती में औपचारिक प्रवेश वर्ष 1920 के बाद माना जा सकता है। उनके लगभग 60 वर्ष लम्बे जीवन का समग्र अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि उनके सामाजिक जीवन यात्रा को तीन खंडों में बांटा जा सकता है। पहले खंड में वे जीवन के झंझावातों से टकराते हुए मात्र 20 वर्ष की आयु में सांसारिक सुख से मोह भंग हो जाने पर संन्यास धारण करते हैं। दूसरे खंड में वे समकालीन राजनितिक घटनाक्रमों से ओत-प्रोत रहते हैं और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं गांधी जी के साथ आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| तीसरे खंड में कांग्रेस से मोह भंग होने की वजह से वे पूर्ण रूप से सामाजिक सुधार के निजी कार्यक्रमों कीओररुख करते हैं और जीवन पर्यन्त उन उद्देश्यों को फलीभूत करने के लिए प्रयासरत रहें।

सन 1920 में असहयोग आंदोलन के प्रचार प्रसार हेतु महात्मा गांधी पटना पहुंचे थे| यहाँ वे मौलाना मजहरूल हक के घर पर रुके और यहीं पर 5 दिसंबर को स्वामी जी की गांधी जी से भेंट-वार्ता हुई| गांधी जी के अनुरोध करने पर उन्होंने 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की सदस्यता ली और प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस के साथ काम करने का गाँधीजी को आश्वासन दिया| जिसके बाद स्वामी सहजानंद की बिहार में चल रहे असहयोग आंदोलन के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी काफी बढ़ गयी।एक वर्ष के भीतर हीं वे ग़ाज़ीपुर ज़िला कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में निवार्चित हुए तथा कांग्रेस के 1921 में अहमदाबाद में हुए वार्षिक अधिवेशन में भी उपस्थित हुए।कांग्रेस के कार्यकर्त्ता के रूप में स्वामीसहजानंदने किसानों को अंग्रेजों के शोषण और आतंक से मुक्त कराने का अभियान जारी रखा। उनकी बढ़ती सक्रियता से भयभीत अंग्रेजी शासन द्वारा उन्हें जेल में डाल दिया गया।[4] सन 1930 में जब सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हुआ उस समय स्वामी जी ने पटना के नजदीक अमहरा गांव में नमक बना कर कानून तोड़ा था जिस वजह से उन्हें 6 मास के कारावास की सजा हुई| इसी प्रकार, सन 1934 में जब बिहार प्रलयंकारी भूकंप से तबाह हुआ, उस समय भी स्वामीजी ने बढ़-चढ़कर राहत और पुनर्वास के काम में भाग लिया| कालांतर में कांग्रेस के नेताओं की सुविधा भोगी प्रवृत्ति को देखकर स्वामीजी चिंतित हुए और कांग्रेस के

©Indira Gandhi National Open University

प्रति उनकी आस्था कम हो गयी| उन्होंने यह अनुभव किया कि, कांग्रेस के कुछ नेता कारावास के दौरान विभिन्न प्रकार की भौतिक सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए छल-प्रपंच का सहारा ले रहे थे। यह भौतिक लोलुप्सा स्वामी जी के आध्यात्मिक मूल्यों पड़ खड़े नहीं उतरते थे। जिस वजह से, स्वभाव से हीं विद्रोही स्वामीजी का कांग्रेस से मोहभंग हो गया।[5]

सामाजिक जीवन-यात्रा

अध्यात्म के गंभीर अध्ययन व लेखन, उन्नीसवीं सदी कि साम्राज्यवादी सत्ता को उखाड़ फेकने पर केंद्रित भारतीय राजनीती में अपनी मूर्धन्य उपस्थिति दर्ज करवाने के साथ-साथ स्वामी जी ने सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। सामाजिक क्षेत्र में स्वामी जी द्वारा किये गए प्रयास काफी महत्वपूर्ण और प्रासंगिकहैं|उनके सामाजिक कार्यों पर आध्यत्म दर्शन का प्रभाव साफ़-साफ़ दिखता है|उन्होंने पटना के निकट बिहटा में एक आश्रम की स्थापना की और इसका नाम अपने आराध्य के नाम पर 'सीतारामआश्रम' रखा था| इसी आश्रम में रहकर उन्होंने सामाजिक जागरण व सुधार के कार्यों को जोर-शोर से प्रारंभ किया तथा दो दर्जन से अधिक उपयोगी ग्रंथों की रचना एवं संकलन कार्य को सम्पादित किया। जिसमे 'भूमिहार-ब्राह्मण परिचय','झूठ भय मिथ्या अभिमान','गीता ह्रदय' जैसी कुछ कालजयी रचनाएं शामिल हैं| ब्राह्मणों की एकता और संस्कृत शिक्षा के प्रचार पर उनका विशेष ध्यान रहा। सिमरी में रहते हुए सनातन धर्म के जन्म से मरण तक के संस्कारों पर आधारित 'कर्मकलाप' नामक 1200 पृष्ठों के विशाल हिन्दी ग्रंथ की रचना की।'ब्रह्मर्षिवंश विस्तार' ग्रंथ में उन्होंने ब्राह्मण जाति के अंदर हुए विभिन्न विच्छेद तथा उसकी वजह से होने वाले उनके शाखाओं-उपशाखाओं के विस्तार को वर्गीकृत किया तथा विभिन्न जातियों के प्रारंभिक कुल का वर्णन कियाहै| स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा'मेंराजीवन संघर्ष'नामक ग्रंथ में संकलित किया है| इसमें उनके जन्म से लेकर किसान आंदोलनतक सभी विषयों को बहुत ही मर्मस्पर्शी स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है|[6] उनका ध्यान सबसेअधिकभारत में अंग्रजी मार से दबे कुचले और गरीब किसानों पर केंद्रित रहा| इसी श्रृंखला में 17 नवंबर,1928 को बिहार के सारण जिले के सोनपुर में उन्हें प्रांतीय किसान सभा का अध्यक्ष चुना गया। इस मंच से उन्होंने किसानों की कारुणिक स्थिति को गंभीरता से उठाया तथा इस क्षेत्र में जमींदारी व्यवस्था से संबंधित समस्याओं के निपटारे करने वाली संस्था के रूप में प्रांतीय किसान सभा को विकसित किया| प्रारंभ में तो यह संस्था जमींदार तथा किसान के मध्य संबंध को मधुर करने के लिए प्रयास करती रही परंतु सन 1933 के बाद यह संस्था समाजवादी विचारधारा के नेताओं के सीधे प्रभाव में आ गयी| 1935 तक आते-आते इस संस्था में 33000 लोग सदस्यता ग्रहण कर चुके थे और इसके मंच से जमींदारी व्यवस्था को समाप्त करने के लिए आवाज उठाई जाने लगी| सन 1936 के अप्रैल माह में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विशेष-सत्र लखनऊ में आयोजित हुआ| अधिवेशन के दौरान किसानों के समस्याओं के समाधान के उद्देश्य के साथ 'अखिल भारतीय किसान सभा' की स्थापना की गयी| स्वामी सहजानंद सरस्वती इसके पहले अध्यक्ष चुने गयें| प्रारंभ में इस सभा के दो प्रमुख उद्देश्य थे- जमींदार व किसान के मध्य सामंजस्य स्थापित करना तथा किसानों को कर्ज से मुक्ति दिलाना| इस कार्य को लोगों तक पहुंचाने के लिए उन्होंने'हुंकार' नामक पत्रिका प्रारंभ की जिसके संपादन एवं प्रकाशन में उन्हें महापंडित राहुल सांकृत्यायन से सहायताप्राप्त हुई|[7]

©Indira Gandhi National Open University

सन 1942 में जब भारत छोड़ो आंदोलनप्रारंभ हुआ, स्वामी जी के सक्रियता की संभावना को देखते हुए अंग्रेजी प्रशासन ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया| इस समय तक आते-आते सुभाष चंद्र बोस भी स्वामी जी के बहुत बड़े प्रशंसक बन गए थे| जब बोसजी कोयह मालूम हुआ कि स्वामी जी को कैद कर लिया गया है, उन्होंने देश के लोगों से स्वामी जी के समर्थन में एक दिन स्वामी सहजानंद दिवस मनाने का आह्वान किया| सुभाष चंद्र बोस, स्वामी जी के विषय में कहते हैं-

> स्वामी सहजानंद सरस्वती, हमारी भूमि में एक ऐसा नाम है जो आपको विस्मित कर सकता है। भारत में किसान आंदोलन के निर्विवाद नेता, वे आज जनता के आदर्श और लाखों लोगों के नायक हैं। रामगढ़ में अखिल भारतीय समझौता-विरोधी सम्मेलन की स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्हें प्राप्त करना वास्तव में एकसौभाग्य था। फॉरवर्ड ब्लॉक के मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक के रूप में उन्हें प्राप्त करना एक विशेषाधिकार और सम्मान की बात थी। स्वामीजी के नेतृत्व में किसान आंदोलन के अग्रणी नेताओं की एक बड़ी संख्या फॉरवर्ड ब्लॉक से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है|[8]

वर्ष 1947 आते-आते वे आंशिक रूप से अस्वस्थ रहने लगे थे| उन्हें रक्तचाप की समस्याने घेर लिया था| सामाजिक भेद-भाव के ख़िलाफ़ लड़ते हुए स्वामी जी 26 जून1950 को उत्तर बिहार की राजधानी कहे जाने वाले शहर मुजफ्फरपुर में महाप्रयाण कर गये। उनके पार्थिव शरीर को पटना के गांधी मैदान ले जाया गया जहां लाखों लोगों ने उनके अंतिम दर्शन किए| उसके बाद उनके शव को सीताराम आश्रम ले जाया गया। इस यात्रा की अगुआई तत्कालीन बिहार के मुख्यमंत्री 'श्री कृष्ण सिंह' कर रहे थे|उनके निधन पर राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा था कि 'दलितों का संन्यासी' चला गया।[9]

उपसंहार: समाज सुधार में उनके द्वारा किये गए प्रयासों के आकलन का हम अगर प्रयास करें तो मरणोपरांत उनको दिए गए विभिन्न उत्कृष्ट सम्मान के आधार पर हम उनकेछवि का आकलन कर सकते हैं|विभिन्न विधाओं के उत्कृष्ट संस्थाओं ने उनके नाम पर अनेक कार्यक्रम और पुरस्कारों का नाम रखा जैसेभारतीय कृषि अनुसंधान परिषदअपने नवीन शोधकर्ताओं एवं कार्यकर्ताओं को उनके बेहतरीन योगदान के लिए'स्वामी सहजानंद सरस्वती वैज्ञानिक/ कार्यकर्ता विस्तार पुरस्कार' प्रदान करती है। वर्ष 2001 में, सरस्वती की 112वीं जयंती के अवसर पर दो दिवसीय किसान महापंचायत का आयोजन किया गया था।भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया तथा उनके गृह जिला गाजीपुर में उनके नाम पर एक महाविद्यालय भी हैं।[10]

स्वतंत्रता के बाद भारत कि सरकार ने क़ानून बनाकर ज़मींदारी राज खत्म कर दिया और ज़मीनों को गरीबों के मध्य बाँटने के लिए कई कार्यक्रम और अभियान चलाये। उन कार्यक्रमों कि सफलता का मूल्याङ्कन एक अलग विषय है, परन्तु वैश्वीकरण की आंधी ने अब किसानों को दोयम दर्जे का नागरिक बनाकर छोड़ दिया है और यह सोचने पर मज़बूर कर दिया है कि,क्याजमींदारी व्यवस्था हीं सभी सामाजिक बुराइयों और असमानताओं के मूल में थी? अभी किसान पहले से कहीं ज़्यादा असंगठित हैं और कर्ज़ के बोझ तले दबते जा रहे हैं। देश में हज़ारों किसान संगठन हैं लेकिन समस्याएं कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। ऐसे समय में स्वामी सहजानंद और अधिक याद आते हैं| जिन्होंने किसान वर्ग को शोषण-मुक्त बनाने में अपना पूरा जीवन झोंक दिया|

सन्दर्भ सूची :

©Indira Gandhi National Open University

1. सरस्वती, सहजानंद।मेरा जीवन संघर्ष; (संपादन, राघव शरण शर्मा)।नई दिल्ली: मीडिया पब्लिशिंग हाउस।1973
2. वही|
3. शर्मा, राघव शरण।बिल्डर्स ऑफ़ मॉडर्न इंडिया: स्वामी सहजानंद सरस्वती। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार|2001
4. सरस्वती, सहजानंद।ब्रह्मर्षि वंशविस्तार;(संपादन,राघव शरण शर्मा)।नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान।2021
5. सरस्वती,सहजानंद।स्वामी सहजानंद सरस्वती रचनावली;वॉल्यूम -2। नईदिल्ली :प्रकाशन संस्थान।2003
6. सरस्वती, सहजानंद।किसान सभा के संस्मरण।इलाहबाद :न्यू लिटरेचर
7. बंद्योपाध्याय, शेखर| प्लासी टु पार्टीशन: हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न इंडिया।नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान|2015
8. शर्मा, राघवशरण| बिल्डर्स ऑफ़ मॉडर्न इंडिया: स्वामी सहजानंद सरस्वती|नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार| 2001
9. बोस, शिशिर कुमार| सुभाष चंद्र बोस: दअल्टरनेटिवलीडरशिप- स्पीच, आर्टिकल्स, स्टेटमेंट्स एंड लेटर्स | नई दिल्ली: परमानेंट ब्लैक|2018
10. शर्मा, राघव शरण| बिल्डर्स ऑफ़ मॉडर्न इंडिया: स्वामी सहजानंद सरस्वती|नई दिल्ली : प्रकाशन विभाग, सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार| 2001

©Indira Gandhi National Open University